



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

भारत मौसम विज्ञान विभाग

सस्य विज्ञान विभाग

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
कानपुर-2



मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवाएं

दिनांक : 01-07-2025

मथुरा (उत्तर प्रदेश) के मौसम का पूर्वानुमान - जारी करनेका दिन : 01.07.2025 (अगले 5 दिनों के 8:30 IST तक वैध)

मौसम कारक	02-07-2025	03-07-2025	04-07-2025	05-07-2025	06-07-2025
वर्षा (मिमी)	19.0	4.0	9.0	11.0	8.0
अधिकतम तापमान(.से)	34.0	35.0	35.0	33.0	34.0
न्यूनतम तापमान(.से)	25.0	26.0	26.0	25.0	26.0
अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	87	81	85	87	85
न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता (%)	61	54	57	62	59
हवा की गति (किमी प्रति घंटा)	6.0	7.0	2.0	2.0	1.0
पवन दिशा (डिग्री)	93	78	117	248	360
क्लाउड कवर (ओक्टा)	5	5	7	7	6

पूर्वानुमान सारांश:

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आगामी पांच दिनों में मध्यम से घने बादल छाये रहने के कारण दिनांक 02 से 06 जुलाई, 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम वर्षा, तेज हवाएं चलने की संभावना है। अधिकतम तापमान 33.0- 35.0°C के मध्य है, जो सामान्य से 1-2°C कम रहने की संभावना है तथा न्यूनतम तापमान 25.0-26.0°C के मध्य है, जो सामान्य से 1-2°C कम रहने की संभावना है। सापेक्षिक आर्द्रता की अधिकतम एवं न्यूनतम सीमा 81-87 तथा 54-62% के मध्य है। हवा की दिशा उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम है तथा हवा की गति 2.0-7.0 किमी प्रति घंटा के मध्य है, तथा झोंके सामान्य से 2-3 किमी प्रति घंटा अधिक गति के रहने की संभावना है।

मौसम चेतावनियाँ अगले दिन के)08:30 IST तक मान्य:(

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार दिनांक 02-06 जुलाई 2025 के मध्य स्थानीय स्तर पर तेज हवाओं एवं गरज-चमक के साथ हल्की से मध्यम वर्षा होने की चेतावनी है।

मौसम चेतावनियों के कृषि पर संभावित प्रभाव और संबंधित एगोमेट सलाह:

आगामी सप्ताह में हल्की से मध्यम वर्षा की संभावना को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि वे धान की तैयार पौध की रोपाई करें। धान की फसल को छोड़कर शेष फसलों से अत्याधिक वर्षा जल निकास का उचित प्रबन्ध करें। जायद की परिपक्व फसलों की कटाई-मड़ाई कर अनाज को सुरक्षित स्थान पर संरक्षित करें। वर्षा ऋतु में पशुओं को खुले स्थान पर न बांधें और न ही उन्हें चरने के लिए बाहर छोड़ें।

सामान्य सलाहकार:

विगत सप्ताह हुई वर्षा से खेत में कटी हुई फसल यदि भीग गई है तो फसल को धूप में अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई का कार्य शीघ्र पूरा करें। धान की तैयार पौध की रोपाई करें तथा वर्षा न होने की दशा में खरीफ मक्का, मूँगफली, ज्वार, तिल एवं अरहर आदि की बुवाई का कार्य करें। धान के पौध की रोपाई के लिए खेतों के मेड़ों को मजबूत करें। जिससे बरसात का पानी खेतों में रुका रहे। कीटनाशकों, रोगनाशी और खरपतवारनाशी रसायनों के लिए, केवल साफ पानी से उपकरणों को धोने के लिए उपयोग करें और हवा की विपरीत दिशा में खड़े होकर कीटनाशी, रोगनाशी और खरपतवारनाशी स्प्रे न करें। यदि संभव हो तो, छिड़काव करने के बाद, खाने से पहले और कपड़े धोने के बाद हाथों को साबुन से अच्छी तरह से धोना चाहिए।

लघु संदेश सलाहकार:

किसानों को सूचित किया जाता है कि धान की तैयार पौध की रोपाई करें तथा वर्षा न होने की दशा में खरीफ मक्का, मूँगफली, ज्वार, तिल एवं अरहर आदि की बुवाई का कार्य करें।

फसल विशिष्ट सलाह:

फसल	फसल विशिष्ट सलाह
चावल	धान की नर्सरी से अत्यधिक वर्षा जल निकास का उचित प्रबन्ध करें। अत्यधिक वर्षा की स्थिति में रोपाई का कार्य स्थगित रखें। धान के पौध की रोपाई के लिए खेत तैयार करें और धान की 22 -25 दिन के पौध की रोपाई करें। धान के पौध की रोपाई के लिए खेतों के मेड़ों को मजबूत करें। जिससे बरसात का पानी खेतों में रुका रहे। धान की फसल में चौड़ी एवं संकरी पत्ती के खरपतवार के नियंत्रण के लिए रोपाई के २-३ दिन के अन्दर अनिलोफॉस 30 % ई.सी. या प्रिटलाक्लोर 1.25 लीटर/हे० की दर से 500 -600 लीटर पानी में घोल बनाकर 2-3 इंच पानी छिड़काव करें। धान में खैरा रोग दिखाई दे रहे हो तो इसके नियंत्रण हेतु 20-25 किलोग्राम जिंक सल्फेट व 2.5 किलोग्राम चूना 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
मक्का	अत्यधिक वर्षा जल निकास का उचित प्रबन्ध करें। वर्षा न होने की दशा में बुवाई का कार्य करें। समय से बोई गई मक्के की फसल में प्रथम निराई-गुड़ाई 15-20 दिन बाद करें। खरीफ मक्का की अनुशंसित संकर किस्मों- डी -7074, डी -9144, एम -2525, गंगा, आजाद शेखर मक्का -1, आजाद शेखर मक्का -2, आजाद उत्तम और आजाद कमाल आदि की बुवाई करें।
तिल	वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई बुवाई का कार्य स्थगित रखें। तिल के फसल की संस्तुति किस्मों- टाइप-4, 12, 13, टाइप -78 ,शेखर, प्रगति, तरुण, आर टी -351 और आर टी -346 आदि में से किसी एक किस्म की बुवाई का कार्य आसमान साफ होने पर करें।
मूँगफली	वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई बुवाई का कार्य स्थगित रखें। खरीफ मूँगफली की संस्तुति संकर किस्म- चित्रा, कौशल ,प्रकाश, अम्बर, उत्कर्ष, दिव्या ,कौशल-गुच्छेदार किस्म- चंद्रा, टा -28, 64 एम -13 आदि की बुवाई करें और मूँगफली की बुवाई के लिए 70-80 किग्रा / हेक्टेयर की दर से बुवाई का कार्य आसमान साफ होने पर करें।
गन्ना	वर्षा की संभावना को देखते हुए सिचाई का कार्य स्थगित रखें। खड़ी गन्ने की फसल में खरपतवार

फ़सल	फ़सल विशिष्ट सलाह
	नियंत्रण हेतु निराई-गुड़ाई का कार्य करें। ये सभी कृषि संबंधी कार्य मानसून की वर्षा प्रारम्भ होने से पूर्व पूर्ण कर लें। चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु ग्रसित नवजात पौधे को जमीन की सतह से काटकर नष्ट कर दें अत्यधिक प्रकोप दिखाई दे तो इसके नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150-200 मि.ली. कीटनाशक दवा को 400 -500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव कर सिंचाई करें।

बागवानी विशिष्ट सलाह:

बागवानी	बागवानी विशिष्ट सलाह
गोभी	खरीफ में बोई जाने वाली सब्जी बैंगन, मिर्च , अगेती फूलगोभी की नर्सरी व भिन्डी, लोबिया, कद्दू, लौकी, तरोई, करेला, खीरा आदि की बुवाई का उपयुक्त समय हैं। सब्जियों की फसलों में तना /फल/पत्ती छेदक कीट की रोकथाम हेतु नीम आयल 1.5-2.0 मिली॰/लीटर पानी में घोल बनाकर 3 -4 छिड़काव 8 -10 दिन के अन्तराल पर करें। कद्दूवर्गीय फसलों में हरा फुदका एवं सफेद मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत 1.0 मिली. रसायन की मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8-10 ट्रैप प्रति हे० की दर से लगायें।
आम	फलदार बागों की रोपाई हेतु मई माह में खोदे गये गढ़वों की भराई करने के लिए ऊपर की आधी मिट्टी में सड़ी हुई खाद की गोबर को मिलाकर जमीन की सतह से 15 से 20 सेन्टीमीटर ऊपर तक भराई कर लें। अमरूद फलों में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8-10 ट्रैप प्रति हे० में 6 से 8 फिट की ऊंचाई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20-25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहे।

पशुपालन विशिष्ट सलाह:

पशुपालन	पशुपालन विशिष्ट सलाह
भैंस	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पशुबाड़े में बाह्य परजीवी की रोकथाम हेतु चूने का छिड़काव करें। पशुओं को वर्षा के दौरान खुले स्थानपेड़ के नीचे न बांधें। पशुओं को रात के समय आसमान साफ होने / पर ही खुले में बांधें। पशुओं को दिन के समय छायेदार स्थान पर बांधें। पशुओंको खुरपकामुँहपका रोग - कसीन से टीकाकरण .क्यू.वैक्सीन तथा लगड़िया बुखार से बचाव हेतु वी .डी.एम.की रोकथाम हेतु एफ कराये। पशुओं को हरे और सूखे चारे के साथ पर्याप्त मात्रा में अनाज दें। पशुओं को साफ एवं ताजा पानी दिन में 3 -4 बार अवश्य पिलायें। गर्भित पशुओं को ढलान वाले स्थान पर न बांधें । पशुओं को पेट में कीड़ों की रोकथाम के लिए कृमिनाशक दवा देने का उचित समय है।

मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह:

मुर्गी पालन	मुर्गी पालन विशिष्ट सलाह
मुर्गी	किसानों को सलाह दी जाती है कि वे मुर्गियों को भोजन में पूरक आहार, विटामिन और ऊर्जा खाद्य सामग्री मिलाएं और साथ ही साथ कैल्शियम सामग्री भी मुर्गियों को दें। मुर्गियों के पेट में कीड़ों की रोकथाम के लिए दवा दें। मुर्गियों को गर्मी से बचाव हेतु गर्मी हाउस में पर्दे (डिवमिर्ग), पंखे और वेंटिलेशन की व्यवस्था करें।

